

Q. लोक प्रशासन के अर्थ, कार्यक्षेत्र एवं महत्व की विवेचना कीजिए।

लोक प्रशासन (Public Administration) आधुनिक राज्य व समाज के निर्माण तथा संचालन की अनिवार्य प्रक्रिया है, जो न केवल नीति-निर्माण और क्रियान्वयन के स्तर पर बल्कि जन-संपर्क, लोक कल्याण तथा प्रशासनिक दक्षता के माध्यम से नागरिकों की जीवन शैली, सुरक्षा एवं विकास को गहराई से प्रभावित करता है। यूपीएससी या राज्य सेवा परीक्षाएँ ऐसे ही विषयों को गहराई से समझना चाहती हैं, जिससे अभ्यर्थी नीतिगत और व्यावहारिक पहलुओं को स्पष्टतः प्रस्तुत कर सकें।

लोक प्रशासन का अर्थ

लोक प्रशासन वह प्रक्रिया है जिसके तहत सरकार अपनी नीतियों, योजनाओं व फैसलों को व्यवहार में लाती है तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यह केवल कर्मकांड या आदेश जारी करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के व्यापक हितों की पूर्ति हेतु योजनाबद्ध प्रयासों का समुच्चय है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोक प्रशासन का स्वरूप पहले से अधिक वैज्ञानिक, बहुआयामी व कल्याणकारी हुआ है। डॉ. वुडरो विन्सन के अनुसार — “लोक प्रशासन वह विचार है जिसके तहत राज्य की नीतियों को व्यवहार में लाया जाता है और सरकारी कार्यों का क्रियान्वयन किया जाता है।”

कार्यक्षेत्र

लोक प्रशासन के कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक हैं, जिनके अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आती हैं:

- **नीति निर्माण और क्रियान्वयन:** सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों का वास्तविक रूप में लागू करना।
- **लोक सेवाएँ प्रदान करना:** शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून एवं व्यवस्था, आधारभूत सुविधाएँ आदि की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- **नियमन एवं नियंत्रण:** समाज में नियमन व नियंत्रण से संबंधित नियमों का पालन करवाना।
- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली:** अन्न, जल, बिजली आदि का वितरण।
- **आपदा प्रबंधन:** आकस्मिक समस्याओं का समाधान व राहत कार्य।
- **कर संग्रहण:** आर्थिक संसाधनों की उगाही व प्रबंधन।
- **लोक सहभागिता:** सामाजिक सहभागिता सुनिश्चित करना एवं शिकायत निवारण।

भारत में प्रशासनिक व्यवस्था के तहत जिलाधिकारी की जिम्मेदारी जनहितैषी योजनाओं का संचालन, कानून-व्यवस्था बनाए रखना, आपदा प्रबंधन, निर्वाचन प्रक्रिया की देखरेख जैसी मुख्य गतिविधियाँ हैं। इसी तरह, सरकारी अस्पताल सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की बुनियाद रखते हैं।

महत्त्व

लोक प्रशासन का महत्त्व सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भ में अनेक स्तरों पर रेखांकित किया जाता है:

1. लोक कल्याण की पूर्ति

लोक प्रशासन समाज के कमजोर, वंचित व पिछड़े वर्गों के हितों की रक्षा करते हुए कल्याणकारी योजनाओं का सशक्त क्रियान्वयन करता है, जिससे सामाजिक न्याय व समानता बनती है।

2. नीतियों का क्रियान्वयन

सरकारी नीतियों, योजनाओं व इच्छाओं को जमीन पर उतारने का कार्य लोक प्रशासन ही करता है। योजनाबद्ध विकास, ग्राम विकास, शहरी नियोजन, जनसंख्या नीति आदि सबकी सफलता प्रशासनिक एवं क्रियान्वयन क्षमता पर निर्भर करती है।

3. सुशासन एवं पारदर्शिता

लोक प्रशासन के माध्यम से शासन तंत्र में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और जनता के प्रति जवाबदेही आती है। जैसे कि सूचना का अधिकार (RTI) कानून ने लोक प्रशासन को पहले से अधिक पारदर्शी व उत्तरदायी बनाया।

4. सामाजिक बदलाव एवं समावेशिता

प्रशासन के माध्यम से समाज में शिक्षा, स्वच्छता, टीकाकरण, महिला सशक्तिकरण जैसी सकारात्मक सामाजिक बदलाव लाए जा सकते हैं।

5. राष्ट्रीय-सुरक्षा एवं संकट में नेतृत्व

प्राकृतिक आपदा, महामारी या सुरक्षा संकट में प्रशासनिक व्यवस्थाएँ त्वरित फैसले लेकर राहत व बचाव कार्य करती हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा व जनजीवन संरक्षित रहता है।

6. लोकतंत्र का आधार

लोक प्रशासन ही लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करता है — चुनाव प्रक्रिया, जनप्रतिनिधि चयन, शिकायत सुनवाई आदि, जिससे लोकतंत्र की जड़ें गहरी होती हैं।

7. सतत् विकास

पर्यावरण संरक्षण, जल-संरक्षण, सतत् ऊर्जा नीति, जनसंख्या नियंत्रण जैसी योजनाएँ प्रभावी रूप से प्रशासन द्वारा आगे बढ़ाई जाती हैं, जिससे दीर्घकालिक विकास संभव होता है।

वर्तमान संदर्भ में लोक प्रशासन की चुनौतियाँ

1. भ्रष्टाचार एवं दक्षता की कमी

अधिकांश सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, कार्य में अनावश्यक देरी जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं, जिससे प्रशासन की छवि प्रभावित होती है।

2. तकनीकी बदलाव का दबाव

डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, स्मार्ट सिटी जैसी पहलों से प्रशासन के समक्ष तकनीकी दक्षता प्राप्त करने की चुनौती उत्पन्न हुआ है।

3. जनसंख्या दबाव एवं संसाधनों की कमी

प्रशासन को बढ़ती जनसंख्या एवं सीमित संसाधनों के बीच संतुलन साधना कठिन होता जा रहा है।

4. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ

भूमंडलीकृत विश्व में नीतियां एवं प्रशासनिक उपाय स्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं — जैसे कि कोविड-19 महामारी में त्वरित निर्णय एवं प्रबंधन प्रशासनिक क्षमता की असल कसौटी रही।

सरकार द्वारा उठाए गए मुख्य कदम

- ई-गवर्नेंस को बढ़ावा
- पारदर्शिता हेतु सूचना का अधिकार कानून
- सुशासन अभियान व मिशन कर्मयोगी
- प्रशासन में प्रशिक्षण व क्षमता विकास
- सामाजिक विकास, महिला व बाल कल्याण योजनाएँ

निष्कर्ष

लोक प्रशासन न केवल सरकार का आंतरिक ढांचा है, बल्कि समूचे समाज के संचलन, विकास और कल्याण की रीढ़ है। समकालीन समय में, प्रशासन का स्वरूप नागरिक के अधिकार, पारदर्शिता और सतत् विकास की ओर केंद्रित हो गया है। भविष्य में लोक प्रशासन की भूमिका तकनीकी नवाचार, जनभागीदारी व नैतिक प्रशासन के इर्द-गिर्द और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। विद्यार्थियों को लोक प्रशासन विषय की गहराई, व्यावहारिकता और वर्तमान संदर्भ की समझ बनाये रखना आवश्यक है।